चक्रव्यूह

①



अशोक

चक्रव्यूह

(कविता संग्रह)

रचनाकार

अशोक

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

पटना

प्रकाशक
उर्वशी प्रकाशन
मुसल्लहपुर, पटना-६

आवरण
काजल सेन

मूल्य { साधारण संस्करण — 10/-
पुस्तकालय संस्करण —

प्रथम संस्करण—जनवरी, १९८६ ई०

प्रति—१०००

मुद्रक—पूर्णिमा प्रिंटर्स
मुसल्लहपुर, पटना-६

CHAKRAVYOOH
(Maithili Poems)
Ashok

समर्पण



(श्री उमापति झा, लोहना)

दादा केँ,
हमर सभ किछु
कोनो ने कोनो रूप मे
जिनकर छन्हि,
हुनके
ई 'चक्रव्यूह' सेहो ।

—अशोक

यथार्थक बोध आ' आस्थाक स्वर

अपन गाम 'आ 'अपन ग्रामीण हमरा सन-सन प्रवासीकेँ किछु बेसी नीक लगै छै'—हमरहु लगैए। मुदा किछु वस्तु-विशेष वा व्यक्ति-विशेषक प्रति किछु विशेष मोह उपजि जाइ छै' ओहिना — अनमधाने। किएक ?...... ई कहब आसान नहि।.......से अपन गाम लोहनाक माटिक उपज अनुज-बन्धु अशोक बाबूक विषयमे सेहो सएह कहि सकैत छी। ई ओना तँ पहिनहुँ नीक लगैत छलाह; मुदा तहिया सँ आओर विशेष नीक लागए लगलाह, जहिया सँ हिनक साहित्यिक प्रतिभा आ' रूचिक पता लागल।...... प्रारम्भहि सँ हम हिनक साहित्यकार सँ परिचित छी आ' सतर्क भए हिनक साहित्यिक गति-विधि आ' विकास-यात्राक सतर्क अवलोकन एवं मोनहि-मोन विवेचना करैत रहलहुँ अछि। संतोष भेटैत रहल अछि। आनन्द प्राप्त करैत रहलहुँ अछि। ई ठीके साहित्यकार लगलाह अछि। हिनक कवि आ' कथाकार दुनू नीक लागल अछि।

आइ हिनक पहिल पोथी 'चक्रव्यूह' नामक कविता-संग्रह केँ प्रकाशित होइत देखि सत्ते बहुत खुशी भेल अछि आ' ताहू सँ बेसी आनन्द तँ अथ सँ लए इतिधरि एकरा बाँचि गेलापर भेल अछि।....... यथार्थक बोध सँ भरल आ' आस्थाक स्वर सँ युक्त अशोकक कवि सहज रीतियेँ किंवा बिम्बसभक सहयोग लए जे किछु कहलक अछि ओ प्रभावकारी अछि। हिनका ठीके किछु कहबाक छन्हि, लौल नहि कएलन्हि अछि, ई स्पष्ट भऽ जाइछ।

हम हिनक उज्ज्वल भविष्यक कामनाक संग, हिनका सँ आओर-आओर नीक-नीक रचनाक आशा रखैत, एतबए कहबन्हि जे आस्थाक आगि नहि मिझाय—शिवास्ते सन्तु पंथानः।

स्नातकोत्तर-मैथिली-विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
रा० रा० ब० कैम्पस : जनकपुर धाम (नेपाल)

—धीरेन्द्र
१३-१-८६

एतबे कहबाक अछि जे......

ई हमर पहिल पोथी आ' कविता संग्रह थिक। एहि मे रचनाक्रम १९८५ सँ प्रारम्भ भऽ १९६८ ई० धरिक राखल गेल छैक। पहिने आइ आ' तकर बाद पाछू चलैत काल्हि तकक। हमर कविता यात्रा विगत अट्ठारह वर्ष मे काशी सँ गाम (लोहना), सीतामढ़ी, अररिया, इटाढ़ी (बक्सर) आ' मास्को (सोवियत संघ) होइत पटना धरि पहुँचल अछि। ई सभ स्थान हमर एहि यात्राक मूक साक्षी रहलए।

आइ एहि संग्रहक प्रकाशनक अवसर पर हमरा ओ सभ व्यक्ति मोन पड़ि रहलाह अछि जे कोनो ने कोनो रूप मे हमर कविता-यात्रा सँ जुड़ल छथि। यात्राक प्रारम्भमे श्री चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'क प्रेरणा बेश उत्साहित केने रहय। आइ ओहो मोन पड़ि रहल छथि।

आइ हमरा कान्तिनाथ जी, काञ्चीनाथ, नन्दू, दोस, शैल, शेखर, राज, विधुकर, अनूप जी, अरुण जी, डाक्टर श्यामानन्द जी, भोगेन्द्र जी, केशव, विनोद, अभय, वरुण, ओझा (उदयनाथ झा) आर मोद भाइ, यशोदा भाइ, बटुक भाइ (छत्रानन्द) सभ खूब जोर सँ मोन पड़ि रहल छथि। ई सभ मित्र, बन्धु हमर कविताक श्रोता आ' पात्र दूनू रहल छथि।

शुरूहे सँ हमर कवि रूप कें देखि जे हर्षित, उल्लसित होइत रहलाह अछि, ओहि मार्गदर्शक आ' प्रेरणाक मूर्त्ति अपन भाइ (प्रधानाचार्य श्री सुशील झा जी)कें आइ स्मरण कऽ श्रद्धा निवेदित कऽ रहल छी। संगहि डा० 'प्रभाकर' आ' प्रो० श्री 'रमाकर' जी एवं श्री मनमोहन जीक द्वारा देल गेल उत्साह आ प्रेरणा कें सेहो बिसरल नहि जा सकैए।

श्री धीरु भाइ (डा० धीरेन्द्र)क लेल की कहल जाय? एहि बाट पर चलनाइ सिखौनिहार वैह छथि।

अपन जीवन आ' कविता-यात्रा मे संग रहनिहार आ' चलनिहार शिवशंकर कें मोन पाड़बाक काज नहि। ओ तऽ आइयो लगे मे छथि।

एहि संग्रहक प्रकाशन लेल हम सोचिते रहि जइतहुँ जँ गोपीकान्त जीक सहयोग नहि भेटैत। एहिक्रम मे विभूति आनन्द, महारुद्र जी आ' काजल सेन के धन्यवाद देब आवश्यक बूझैत छी।

अपन पहिल काव्य-संकलन सुधी समाज लग उपस्थित करैत आइ बेश प्रसन्नता भऽ रहल अछि। कविताक सम्बन्ध मे की कही, कविते अपन सम्बन्ध मे कहत। आर किछु कहबाक नहि अछि। विश्वास अछि पाठक स्वयं कविता पढ़ि किछु कहताह, सोचताह आ' उत्साह बढ़ौताह। शेष फेर दोसर बेर—

अशोक

२७-१-८६ ई०

क्रम

चक्रव्यूह /९

हम किछु पूछब /११

सोवियत रूस सँ /१३

गीत जे नहि लिखल गेल /१५

लोक किछु नहि करए /१७

की सुनाउ अहाँ कें ?/१९

तोरा गछने रही /२१

संचिकास्त /२३

शिला लेख /२४

एतबे कहबाक अछि जे......

ई हमर पहिल पोथी आ' कविता संग्रह थिक। एहि मे रचनाक्रम १९८५ सँ प्रारम्भ भऽ १९६८ ई० धरिक राखल गेल छैक। पहिने आइ आ' तकर बाद पाछू चलैत काल्हि तकक। हमर कविता [illegible] विगत अट्ठारह वर्ष मे काशी सँ गाम (लोहना), सीतामढ़ी, अररिया, इटाढ़ी ([illegible]सर) आ' मास्को (सोवियत संघ) होइत पटना धरि पहुँचल अछि। ई सभ स्थान हमर एहि यात्राक मूक साक्षी रहलए।

आइ एहि संग्रहक प्रकाशनक अवसर पर हमरा ओ सभ व्यक्ति मोन पड़ि रहलाह अछि जे कोनो ने कोनो रूप मे हमर कविता-यात्रा सँ जुड़ल छथि। यात्राक प्रारम्भमे श्री चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'क प्रेरणा बेश उत्साहित केने रहय। आइ ओहो मोन पड़ि रहल छथि।

आइ हमरा कान्तिनाथ जी, काञ्चीनाथ, नन्दू, दोस, शैल, शेखर, राज, विधुकर, अनूप जी, अरुण जी, डाक्टर श्यामानन्द जी, भोगेन्द्र जी, केशव, विनोद, अभय, वरुण, ओझा (उदयनाथ झा) आर मोद भाइ, यशोदा भाइ, बटुक भाइ (छत्रानन्द) सभ खूब जोर सँ मोन पड़ि रहल छथि। ई सभ मित्र, बन्धु हमर कविताक श्रोता आ' पात्र दूनू रहल छथि।

शुरूहे सँ हमर कवि रूप केँ देखि जे हर्षित, उल्लसित होइत रहलाह अछि, ओहि मार्गदर्शक आ' प्रेरणाक मूर्त्ति अपन भाइ (प्रधानाचार्य श्री सुशील झा जी)केँ आइ स्मरण कऽ श्रद्धा निवेदित कऽ रहल छी। संगहि डा० 'प्रभाकर' आ' प्रो० श्री 'रमाकर' जी एवं श्री मनमोहन जीक द्वारा देल गेल उत्साह आ प्रेरणा केँ सेहो बिसरल नहि जा सकैए।

श्री धीरु भाइ (डा० धीरेन्द्र)क लेल की कहल जाय? एहि बाट पर चलनाइ सिखौनिहार वैह छथि।

अपन जीवन आ' कविता-यात्रा मे संग रहनिहार आ' चलनिहार शिवशंकर केँ मोन पाड़बाक काज नहि। ओ तऽ आइयो लगे मे छथि।

एहि संग्रहक प्रकाशन लेल हम सोचिते रहि जइतहुँ जँ गोपीकान्त जीक सहयोग नहि भेटैत। एहिक्रम मे विभूति आनन्द, महारुद्र जी आ' काजल सेन के धन्यवाद देब आवश्यक बूझैत छी।

अपन पहिल काव्य-संकलन सुधी समाज लग उपस्थित करैत आइ बेश प्रसन्नता भऽ रहल अछि। कविताक सम्बन्ध मे की कही, कविते अपन सम्बन्ध मे कहत। आर किछु कहबाक नहि अछि। विश्वास अछि पाठक स्वयं कविता पढ़ि किछु कहताह, सोचताह आ' उत्साह बढ़ौताह। शेष फेर दोसर बेर—

अशोक

२७-१-८६ ई०

क्रम

चक्रव्यूह /९

हम किछु पूछब /११

सोवियत रूस सँ /१३

गीत जे नहि लिखल गेल /१५

लोक किछु नहि करैए /१७

की सुनाउ अहाँ केँ ?/१९

तोरा गछने रही /२१

संचिकास्त /२३

शिला लेख /२४

फेर कोनो विजुरी चमकल /२६
अहाँके की चाही ? /२७
चुप्पी नहि सोहाइये /२९
पाँती आइ जरूर लिखवै /३१
असगर /३३
रचना सँ पहिने /३४
शून्य /३६
मोनक घंटी /३७
दबकल कुकूर /३८
बिन फ्रेमक तस्वीर /३९
हमरा कोनो नाम दऽ दे /४१
उदास भोरक एक गीत /४४
कहिया धरि /४६
एक विन्दु : तीन बिम्ब /४७
प्रेमक तीन आखर /४९
एक राति /५०
साँझ /५२
नव सीन /५४
सीप मंहक मोती /५६
पाँच टा अनेरुआ कविता /५८
दू बून्द नोर /६१

चक्रव्यूह

खाली तकैत रहबा पर
खाली सोचैत रहबा पर
विवश हे हमर पुरुष !
मोन मे कुण्डली मारने बैसल
साँप के झमारि फेकू
भयमुक्त होउ।

उठाउ रथक पहिया
व्यूह मे घेराएल अभिमन्यु जकाँ।
लड़ैत रहब जँ धर्म थिक
तऽ जीत-हारिक चिन्ता
जुनि करू।

मानल जे अहाँक आगूक कौरव
अधर्मिके नहि भ्रष्टो छथि
कहुखन के पाण्डवोक भेष
धऽ लैत छथि।

भेष बदलबा मे निपुण
अपन शत्रु के चिन्हबाक
दृष्टि पर सँ
मोहक रेशमी पर्दा हटाउ।

उबारि लिअऽ अपना के
अनेक कमजोर क्षणक दासत्व सँ,
निकलि चलू, निकलि चलू
अतीतक फुसियाह आ'
भविष्यक महत्त्वाकांक्षी
स्वप्न महलक दुर्ग सँ बाहर।

वर्त्तमान कोनो प्लास्टिकक
फूल नहि थिक बन्धु !
जकरा खाली मोनक देवाल
पर टँगने रहब।
वर्त्तमान कोनो नव भेराएटीक
कैक्टसो नहि थिक
जकरा अपन बालकनी मे कोनो
गमला मे रोपने रहब।

वर्त्तमान तऽ आइ विस्तृत कुरुक्षेत्र थिक।
जतऽ आइ ने युधिष्ठिर छथि
ने अर्जुन।
आ' ने धर्म-कर्मक उपदेश देनिहार
गीताक कृष्ण !
आइ तऽ कुरुक्षेत्र मे
चक्रव्यूह रचल अछि
आ मात्र एकटा टूटल रथक
पहिया राखल अछि।

आउ हे हमर पुरुष, आउ !
कम सँ कम
टूटल रथक पहिया उठाउ।
लड़ैत रहब जँ धर्म थिक
तऽ जीत-हारिक चिन्ता जुनि करू।
पहिया उठाउ, पहिया उठाउ। □

हम किछु पूछब

आब तोरा की कहियह ?
अनचोके आयल
चुप्पीक मोल निलाम
भेल हमर मोन।
तोरा आब खाली
बुझैत रहत, गमैत रहत,
किछु कहैत नहि रहत।
किछु कहबाक पूर्वक
बूझब आ' कहलाक
बादक बूझब मे
आयल फरक
जखन कोनो मौनक
बोली लगबऽ लगैत अछि
तऽ भाइ, ई सभ सम्बन्ध, अनुबन्ध
नाँगट भऽ जाइए।
एहि चीर-हरण मे आइ
कृष्णक भूमिका
दुष्सासनक आगू
ठेहुनियाँ दऽ दैत अछि।
कृष्ण या तऽ अएबा मे
बिलम्ब करैत छथि
वा अपना के एहि झंझट
सँ फराक कऽ लैत छथि।
आ' दुष्सासन कृष्णक विवशता पर
हँसैत, मुसकाइत आब चीरो-हरण
करैत अछि आ' कृष्ण के
द्रौपदीक बदला मे सोरो करैए।

नांगट भेल हमर सम्बन्धक द्रौपदी
आइ चिचिया नहि सकैए
कानि नहि सकैए।
खाली टुकुर-टुकुर तकैत रहए।

भाइ, निलाम पर चढ़ल हमर
मोन के
टुकुर-टुकुर तकैत रहब
हमर आ' तोहर दिनचर्या भऽ गेलए।

आब तोरा कि कहियह ?
संवेदनहीनता सँ संवादहीनता तकक
रस्ता मे एत्ते बेर—
लोक जनमैए
आ' एत्ते बेर मरैए
जे
कखनहुँ कें अपन लाश अपनहि देखैए।

अपन लाश के अपनहि पीठ पर
उघैत हम, आइ अंतमे
तोरा सँ पूछैत छियह—
हम बेताल कहिया हैब ?
हम विक्रमादित्य कहिया हैब ?
कहिया हम किछु पूछब आ'
तों किछु उत्तर नहि—
दऽ सकबह।



सोवियत रूस सँ

एहि देशक विकास की कहियह दोस !
एहिठाम जेना कलम चलैए
तहिना कोदारियो चलै छै।
कलम चलबऽ बला हाथ के
कोदारि चलबैत
एकोरत्ती लाज नहि होइ छै।
मात्र फोटो छपाबऽ लेल
कियो श्रम नहि करैए।

एहिठामक लोक
खूब पढ़ैए
खूब हँसैए, नचैए, गबैए
राति-दिन श्रम करैए।
श्रम एहिठामक खून मे छैक

आ' खून लाल होइत छैक—
से तोरा बूझले छह ।

लोकक दूनू हाथ मे जेना
जादू भरल छैक एतऽ
निर्माणक इतिहास की कहियह दोस,
एहि देशक विकास की कहियह दोस !
मोन पड़ैए गामक चौक—
भिनसर सँ साँझ धरि
तमाकू चुनबैत, गप्प लड़बैत
अखबारक पन्ना पर
राजनीति करैत लोक
साल मे चारि बेर भोट दैत
भोट दऽ कए फोंफ कटैत
अजुका काज काल्हि पर टारैत
अनेरे बैसल माछी मारैत लोक ।

पसीना सँ उपजल
संतोष आ' उल्लास
श्रम आ' सृजनक सुख
कोना भोगि सकत ?
संकल्पक संग चलैत
प्रगति दिस बढ़ैत पगध्वनि
कोना सुनि सकत ?
कोना सुनि सकत दोस !
टघरल घामक विश्वास की कहियह दोस,
एहि देशक विकास की कहियह दोस ॥

गीत जे नहि लिखल गेल

भाइ,
साँझ आ' भिनसरमे
एत्ते फरक छैक
से हमरा तहिया नहि
बूझल रहय ।
तहिया नहि
बूझल रहय जे
साँझ आ' भिनसरक
बीच मे
काजरक पहाड़ सन
कारी राति होइ छैक ।
एहन काजरक पहाड़
जाहि पर भरि राति
मनुक्ख
चढ़ैए, पिछड़ैए
पिछड़ैए, चढ़ैए
देह, हाथ, मुँह, पैर
सभ मे
काजर लेभरि जाइ छै
लेभरैत रहैत छैक
आ' राति
ससरैत रहैत छै
ससरैत रहैत छै ।

भाइ,
रातिक बाद
भोरक जन्म
अदौ सँ होइत रहलैए
भोर ! ललछौंह
कइल गायक
टूना जकाँ ललछौंह

कोमल --
छड़पैत ! कुदैत !! दौड़ैत !!!
मुदा कजरैल रातिक बाद
घास पर सुखायल
निस्तब्ध पड़ल
ओस सन भोर
कहियो कें होइत छै
कहियो काल --
होइत छैक ।

भाइ,
एकटा कवि --
कत्ते रास रचना करैए
कविता लिखैए
गीत लिखैए ।
एक-एकटा
सृजन लेल
राति दिन
वेदना सहैए ।
मुदा भरि-भरि रातिक
वेदनाक बाद
जँ गीत नहि
लिखल होइ तऽ
ओ की कऽ सकैए ?
एतबे कऽ सकैए जे
एकटा साँझ
मात्र एकटा साँझ
ओही गीतक नाम
लीखि देत,
ओही गीतक --
जे गीत नहि लिखल गेल ।
बस.... ।

लोक किछु नहि करैए

आइ जखन एहि शहरक
कोनो मकान सँ धुआँ उठैए
तऽ लोक आगि नहि देखैए
अपन आँखि मिड़ैए ।
आइ जखन गाम मे
कियो लोक
चौबटिया पर ठाढ़ भऽ
किछु कहैए
किछु कहऽ चाहैए

तऽ लोक नहि सुनैए
एक दोसराक मुँह तकैए।

शहर मे, गाम मे, घर मे
रहनिहार लोक
आइ किछु नहि करैए
ने झगड़ा करैए, ने चुप्पे रहैए
खाली भिनसर सँ साँझ
राति सँ भोर धरि
करौट पर करौट फेरैए
पड़ल पड़ल अपन साँस गनैए।

जे अपन साँस गनैए
से किछु ने बजैए
जे बजैए से किछु नहि देखैए
जे देखैए से चुप्पे रहैए
सभहक मुँह, आँखि, कान
आइ निरर्थक भऽ गेलैए,
सभहक मोन असामयिक भऽ गेलैए,
सभहक देह अनावश्यक भऽ गेलैए।

आइ,
जे सार्थक अछि
जे सामयिक अछि
जे आवश्यक अछि
से कोनो नदीक किन्हेर मे
शहर आ' गाम सँ बाहर
बैसल-बैसल
चालनि सँ पानि नपैए
दूर, बहुत दूर मे जरैत
दीपक इजोत मे
कविता लिखैए

की सुनाउ अहाँके ?

जँ आइ हम,
एक प्रेम कविता सुनाबी
तऽ हमर किछु साहित्यिक—
परिचित कहताह लगले
फलाँ देशक साहित्यमे –
आब प्रेम कथा, प्रेम कविता नहि
लिखल जाइत छैक।

जँ आइ हम,

दर्दक गीत गाबी
तऽ कहताह लाल भाइ
भेलह बढ़ियाँ, मुदा कहुखन कऽ
बेसुरा भऽ जाइत छलह् ।

जँ हम बन्धु

अपन व्यथा-कथा सुनाएब
तऽ अहाँ अनेरे
हमरा पर तमसाएब —
थाकल-हारल देह के, मोन के
आर माहुर करैए
ने अपने सुतैए, ने हमरा सुतऽ दैए ।

जँ मीत,

हम अहींक गप्प कही
तऽ कहब अहाँ
कहताह ओ
छेंटैए, भोगल यथार्थ
कहाँ कहैए ?
तऽ की सुनाउ अहाँके
दादी, बाबीक खिस्सा ?
पंचतंत्र, हितोपदेश ?
खिस्सा तोता मैना ?
शंकर, मंडन, विद्यापतिक गप्प ?
गामक गोलैसी, चौकक राजनीति
शहर बनैत गामक गजल आ'
कि जंगल बनैत शहरक साहित्य ?
कि सुनाउ ?
आ' कि आइ भिनसुरका अखबार ?
की सुनाउ अहाँके ?

●

तोरा गछने रही

तोरा कहि दैत छियह,

आइ काल्हि कियो
ककरो लेल किछु ने करैए
ने कविता लिखैए, ने गीत गबैए ।
ककरो लेल किछु करब आइ
इतिहास-पुराणक गप्प छैक ।
आइतऽ लोक केवाड़ बंद कऽ कें
अपन घरमे सुटकल रहैए
ने हँसैए, ने बजैए
दुखीत शहर के आर दुखीत करैए ।

तोरा बुझल छह,

इहो शहर अजबे छैक,
ने जीबैए, ने मरैए
खाली फटीचर शराबी जकाँ
सुनसान गली मे
चिकड़ैए, भोकड़ैए ।
आ' लोक डरे दबकल रहैए

दम साधव तहिया एक कला रहैक
आइ जीबाक एक साधन छैक।

तों सुनि लैह,
सभ चौकीदार खबरदार अछि
जगनिहार, सुतनिहार अछि।
लोक अपन छाया सँ डरैए
तैं रातियो केँ करौट नहि फेरैए।
ने हँसैए, ने बजैए।
ककरो लेल किछु करब आइ
इतिहास-पुराणक गप्प छैक।

तोरा कहि दैत छियह,
अजुका राति भलेही
इतिहास बनि जाय।
हम गलीमे निकलब
आ' खूब जोर सँ चिकड़ब
एत्ते जोर सँ चिकड़ब जे
फटीचर शराबी चुप्प भऽ जायत।
चुप्प......चोप्प...... !!
लोक हँसत, बाजत
अपन घर मे करौट फेरत।
—तखन जेना

तोरा गछने रही
एहि मौसम केँ कविता
तोहर नाम कऽ देब।



संचिकास्त

एहि छुट्टीमे
गाम अएबाक लेल
अहाँक अनुरोध
संचिका—
उपस्थापित करबाक
हमर आदेश।
गामक लोक-वेद
दोस-महिम
बोन-झाँखुर
हँसी-ठहक्का।
संचिकाक
प्रारूपण, टिप्पण
स्वच्छ प्रति हस्ताक्षरित।
गामक मोह—
ममता, स्नेह, सम्बन्ध
कंपन, अवगुँठन
आलिंगन !
संचिकाक
स्वीकृति, यथा प्रस्तावित
अनुमोदित, मन्तव्य
अनुशंसा, अग्रसारण।
—संचिकाक संग
अहाँक अनुरोध
आदेशार्थ
संचिकास्त !!



शिलालेख

हमरा होइये अहाँक नाम पर
शिलालेख लिखबादी।

गड़बा दी कोनो मीनार
बनबा दी कोनो स्तूप
जाहिमे अहाँक इतिहास दबल रहय।
दबल रहय अहाँक उद्दाम पिपासा,
खूनक प्यास, माँसक भूख
अनाचार, निरंकुशता !
अहाँक सपनाक मोल
कतेक घर निलाम भेल'ए,
खेल-खेलमे
कतेक सीता वदनाम भेल'ए।

सत्ते, अहाँक विष-मुस्कान
कतेक ईसा के सूली पर
चढ़ा देलक।

असंख्य राम बिन कसूरे
वेघर बनल,
वनवास भोगि रहलाह अछि।

जँ अहाँकेँ एतबे इच्छा अछि
जे अहाँक नाम आतंकक
प्रतीक बनय
अहाँक स्मृति सँ लोक काँपय
तँ से भऽ गेल।

हे भगवान !
अपन भाभट आब समटू,
कथी लेल जीवित लाश बनल छी ?
मूइने कोनो पाप नहि छै।
जँ कहीं तऽ अहाँक
मरबाक घोषणा कऽ दी।

संगमरमरकेँ कब्र कहिया सँ
अहाँक प्रतीक्षा करैए।
प्रतीक्षामे अछि शिलालेख
मीनार, स्तूप
ई असंख्य जनसमूह !

हमरा बूझल अछि—
अहाँक पुनर्जन्म अवश्य हैत।

मृत्यु लोकक आकर्षण
नरकोमे
अहाँकेँ चैन सँ नहि रहऽ देत।
निश्चित छै ओहि जन्ममे
अहाँ नेता हैब।

लोक अहाँक जयजयकार करत,
गेंदा, गुलाबक मालाक
भार सँ फेर अहाँ मरब।

फेर अहाँक नाम पर शिलालेख लिखल जायत !
मीनार गड़त।
स्तूप बनत ''''!

फेर कोनो विजुरी चमकल

फेर कोनो कनैल गमकल,
फेर कोनो विजुरी चमकल।
कोनो लंगट मेघ कऽ रहल परेड
फेर कोनो वदनाम बरखाक एक टिक्कड़
गोबर सँ नीपल अँगना मे बरसल।
फेर कोनो विजुरी चमकल॥

गुमसुम दुपहरिया
चौल करैत पुरबा
बिन फागुन मातल
गाड़ि पढ़ैत बुढ़बा
फेर कोनो फटीचर अनाड़ी
गली मे सनकल।
फेर कोनो विजुरी चमकल॥

कहियो के पाँती
कहियो के गीत
बरख दिनक हारि
एक दिनक जीत
फेर कोनो वसंती स्मृति आँखि सँ ढरकल
फेर कोनो विजुरी चमकल॥

मेहदी रचल दिन
काजर पाड़ल राति
चुप्प ठाढ़ पाथर
नचैत-गबैत माटि
फेर कोनो गुलबिया क्षण बिच्चे मे ठमकल।
फेर कोनो विजुरी चमकल॥

अहाँ कें की चाही ?

हुजुर, अहीं कहू ?
अहाँ कें की चाही ?
शब्द चाही
की अर्थ चाही ?
हमरा लग राशि-राशिक
शब्द अछि।
फूसि, साँच, भरिगर, हल्लुक
तत्सम, तद्‌भव,
देशी, विदेशी, जी हाँ
एकदम 'इम्पोर्टेड शब्द।
जे चाहब सभ भेटत हुजूर।
जँ अर्थ चाही—
तऽ एक सँ एक हम
पेश कऽ सकैत छी।
तीक्ख, मिट्ठ
कोमल, कठोर
दुरूह, बोधगम्य
सभ तरहक अर्थ

हमर 'शो केश' मे बंद अछि
देखि लेल जाय,
चुनि लेल जाय।

खाली 'आर्डर' के देरी छै, हुजूर।
शब्द आ' अर्थक
हम ढेरी लगा देव।

एक-एक शब्द अहाँक
जिनगी हरियर करऽ लेल
काफी अछि।

एक-एक अर्थ
जिनगी भरिक खोराक होयत।
कोनो तारतम्यक काज नहि
एम्हर-ओम्हर तकबाक काज नहि।
की कहलहुँ हुजुर?
कोन शब्द?
—'आदर्श' आ' 'नैतिकता' तऽ
'आउट आफ मार्केट' अछि।
'सप्लाइ' बंद छैक।

हुजूर, ई घिसल-पीटल शब्द लऽ कऽ
की करब?
'लेटेस्ट डिजायन'क शब्द, अर्थ देखू!
अहाँ केँ किछु नहि करऽ पड़त, हजूर,
खाली एहि कागत पर
दस्तखत करऽ पड़त
केवल एक दस्तखत।

बदला मे जे अर्थ चाही,
जे शब्द चाही।
घबड़ेबाक कोनो बात नहि, हुजूर!
एहन-एहन कतेक दस्तखत
हमर 'आयरन सेफ' मे
बंद अछि। जी!

चुप्पी नहि सोहाइये

बाजू भाइ, कने बाजू
चुप्पी नहि सोहाइये।
जहिया सँ अहाँक मुँह जाबल अछि,
तहिये सँ मोन हमर टाँगल अछि।
कहने रही अहाँ ओहि साल
हौ, पेट लेल चुप्पी अँगेजल'ए
लोक की-की ने करैए।

मुदा भाइ,
चुप्पीयोक मोल
पेट कहाँ भरैए?
एहि सँ नीक तऽ तहिये छल
जहिया गरा मे चमौटी नहि छल।
एहि सँ नीक तहिये रहय
जहिया गाम मे
पँटघाट पर
सीताराम पार्टी रहय
चौठियाक चाह रहय
उन्मुक्त रही, ठहक्का रहय।

—मुदा ई तमाम अतीत
तऽ वर्त्तमातक पूजामे
नैवेद्य भऽ गेल।

भाइ, घर सँ भागै मे
भागल जाइ मे
कोन 'ग्लैमर' छैक ?
ई 'लाली पॉप' जेकरा लेल
अहुछिया कटै छल सर-समाज
की छियैक,
आब अहाँ नीक जकाँ बुझैत छियैक।

येह 'लाली पाप' तऽ चोरा लेलक
अहाँक स्वर, अहाँक गीत !
ओ गीत जे एखनहुँ घर-बाहर
बाध-बोन मे चकभाउर दइए।
भाइ, शरद अहाँ कें कत्ते पसिन्न रहय !
वसंतमे कत्ते उमकैत रही अहाँ ?
मुदा, आइ वसंत अछि,
मातल मौसम अछि
हम छी, अहाँ छी, सभ अछि
मुदा अहाँ चुप्प छी। किए ?

हम बुझै छी
अहाँकें आब कोनो—
सप्पत नहि लागत।
मीतक सप्पत, प्रीतक सप्पत
कोनो सप्पत नहि।

तें भाइ,
अहाँ कें ओही जरलाहा रोटीक सप्पत !

बाजू, कने बाजू !
चुप्पी नहि सोहाइये,
जहिया सँ अहाँक मुँह जाबल अछि
तहिये सँ मोन हमर टांगल अछि॥

पाँती आइ जरूर लिखबै

दोस, तोहर चिट्ठी एखने एकटा
काज कऽ गेल'ए।
जकरा लेल रने-बने बौआइ छी
अनचोके से मोन पड़ि गेल'ए।
मोन पड़ि गेल'ए ओकर डब डबाएल आँखि,
बूँद-बूँद नोर, जकरा सभदिन ओ
चोरबैत रहल आँचरक खूट मे
ओहि आँचरक सप्पत,
पाँती आइ जरूर लिखबै।

सेन्हता ओकरो रहैक, सेन्हता तोरो छौ
दू आखर लिखै मे
कत्तो काल लगै छै ?
मुदा, आखर अखरे आखर नहि होइ छै
आखरक फ्रेम मे स्मृति के
फोटो रहै छै।
आ' स्मृति के दंश -
हमरो बूझल अछि,

तोरो बुझल छौ, ओकरो बूझल छैक।
ई दंश जखन साहेबक लाल-लाल
आँखि सँ भुभुर कोना खेलाइए
तऽ दोस, एहि गुलामीक सप्पत।
होइये, घुरती टेन सँ गाम घुरि जाइ।
मुदा, ने गाम घूरल होइए
ने पाँती लिखल होइए,
ने एहिठाम रहल होइए।

तेसरा साल जखन
गाम मे बाढ़ि आएल रहै
तऽ सभटा धान दहि गेल रहै।
परुकाँ जखन इन्द्र भगवान
रूसि गेल रहथिन्ह
तऽ सभटा जजात जरि गेल रहै।
बूढ़-बाप, वियाह जोग बहीन
स्त्री, ढेनमा-ढेनमी –
सभहक आहार
हमर दूनू मुट्ठी मे बन्द रहै।
अनरोखे तऽ पड़ाएल रहिऐ गाम सँ।

तहिए सँ दोस, ई देह बन्हकी छै।
भरि दिनक झूरझमान भेल
थाकल-हारल देह के, मोन के
किछु नहि मोन रहै छै।
जखन मोन पड़ैए तऽ
भरि-भरि राति
निन्न नहि होइए।
दोस, रातिक दू बाजि रहलै'ए
काल्हि बड़का हाकिम अबै लेल छै।
मुदा, ओहि आँचरक सप्पत,
पाँती आइ जरूर लिखबै।

असगर

हम असगर, गुमसुम
घूमि रहल छी निर्जन मे,
छोड़ि आएल छी भोड़
अतीतक उपवन मे।
एक मेला पाछू छूटि गेल
एक स्नेहक डोरी टूटि गेल
कोनो दग्ध मोन केर चौखटि पर
स्मृति के बसनी फूटि गेल।
हम देखि रहल छी नोर
समय के दर्पण मे॥

प्रियजन सँ बिछुड़ल आइ हम
एक डारि सँ टूटल आइ हम
कहू, कोना मनाबी दीवाली ?
इजोतक मारल आइ हम॥

हम तोड़ि रहल छी फूल
अन्हारक अर्चन मे॥

एक कविता
मुक्त अकासक
एक गीत
प्रेम, विश्वासक
छिड़िआएल
ललका सपना
चिन्ता आब
भूख पियासक।
हम चलि रहल छी मीत,
भूखक बंधन मे॥

रचना सँ पहिने

डेगा-डेगी बढ़ैत रस्ता मे
मीलक पाथर लग
हम ठमकि गेल छी॰॰।
ओह, कतेक चलि चुकलहुँ !
गर्मी, रौद, हवा, बिहाड़िक बाद—
गाछक छाह तर
मोन पड़ि आएल अछि
अपन बोस वसंत !
जेना वसंत के गोली बना
हम गीड़ि गेल छी।
जेना बरसात के शर्बत बना
हम पीबि गेल छी।
रौद के सीबि लेने छी।
अपन देह मे।
आर···बिहाड़ि के चुपचाप
चोरा लेलहुँ
अपन साँस मे।

प्रत्येक साँस हमर
देह महक फूल सँ
टकराइत बना रहल अछि
एक नव वसंत !

एहि नव वसंत के
मीलक पाथर लग
गाछक छाह तर
हम लोंकि रहल छी
भाँगक गोली जकाँ।
अतीत क स्नेह, सम्मान
ममताक पोटरी केर
गीरह आइ खोलि रहल छी।
उनटा रहल छी
अपन जीवनक पन्ना कें।

प्रत्येक शब्द, हरेक पाँती आब
अनचिन्हार लागि रहल अछि,
जेना अनकर लिखल होइक।
कोना जीबि गेलहुँ एतेक जीवन !
कोना लीखि गेलहुँ एतेक पाँती !
रचना सँ पूर्व रचनाक गुमान
बिन इजोरियाक शरदक चुमाओन।
एक कंपन······।
कतेक ठकलहुँ अपनाकें !
पाछू दिस ताकि कें,
एक खूब नम्हर साँस खींचिकऽ
हम मील सँ
आगू बढ़ि रहल छी।
देखह हौ मीत,
हम आब रचनाक संग
एकदम नव रचना कऽ रहल छी।।

शून्य

अहाँ आबि रहल छी तऽ
हाइत अछि जेना
हम जा रहल छी ।
अहाँ जाइत छी तऽ
लगैत अछि जेना
हम आबि रहल छी ।
हमर अहाँक बीच
ई अएनाइ-गेनाइ
दूनू मीलि कऽ
भऽ गेल अछि शून्य !
एहि शून्य कें
कतेक दिन सँ
हम पोसैत छी
अपन मोन मे ।
जेना येह शून्य
पैघ भऽ जाएत
खूब पैघ !!!
आ'
हम-अहाँ
मीलि जाएब
एहि शून्य मे

मोनक घंटी

हमर मोनक घंटी
टनटन बाजऽ लगैत अछि
जखन अहाँ
हमर मोन मे
प्रवेश करैत छी ।
कतेक रास
लाल-पीयर फूल
गमकि जाइत अछि ।
एक आँजुर अक्षत
छिड़िया जाइत अछि ।
चानन सन शीतल
भऽ जाइत छी हम !
मुदा,
जखन निकलैत छी अहाँ
हमर मोन सँ
तऽ छोट-छोट
अनेक साँप
सह-सह करऽ
लगैत अछि ।

दबकल कुकूर

अपन जीवनक
खेलौना सँ खेलाइत
भविष्यक
शहर के
पाछू छोड़ैत
हम
भोतिया गेलहुं अछि
वर्त्तमानक
कोनो घनगर
बोन मे ।
चारू कात सँ
समय द्वार घेराएल
हिला रहलहुं अछि
नांगरि
दबकल कुकूर जकाँ



बिन फ्रेमक तस्वीर

घुप्प अन्हार राति मे
बिन फ्रेमक तस्वीर लगा कें
पुरान-नव परिचित-अपरचितक
भीड़ सँ बाहर, अपना कें
असगर अनुभव करैत
जीवन कें धकेलि बढ़बाक प्रयासमे
हम छोड़ि देने छी अपन मोन कें
कोनो निर्जन, उजाड़, भयानक
घनगर बोन मे
आ' औना रहल, डरि रहल
अपना मे, अपन देह मे ।

आएल अनेक बिहाड़ि कें
बलजोरी रोकि देने छी ।
आर ई बलात्कार मे चूबैत हमर
हृदयक लहू,

दऽ रहल भरि-भरि गिलाश दर्द ......।
एहि दर्द कें हम पीबि रहल छी,
एहि लहू के हम घोंटि रहल छी ।
किएक ? किएक तऽ
हम अपना कें चीन्हि रहल छी आइ ।
अपना के चिन्हबाक एहि
अन्तहीन प्रयोग मे
हम सभ के नकारि रहलहुँ अछि।
जे कालिह हमर सँग छल
जे हमर कोनो बात पर मारैत छल
एक ठहाका !
जे हमर अनसोहांत क्रिया पर
सदिखन अपन सहमतिक ढोल
गरा मे रहैत छल बन्हने ।
एहि सहमतिक ढोल कें हम
अपनहि हाथे फोड़ि देने छी।
किएक ? किएक तऽ
हम छोड़ि देने छी स्नेहक व्यापार कें।

स्नेहक व्यापार मे लागल
भयंकर घाटा, हँसिरहल हमरा पर !
खिसिया रहल हमर भावना कें
उभारि रहल हमर पाशविकता कें।
हम पशु जकाँ, अपन नाँगरि --
हिला रहलहुँ अछि ।
छटपटा रहलहुँ अछि,
झाड़ि रहलहुँ अछि अपन बिष
एहि घुप्प अन्हार राति मे।
किएक ? किएक तऽ
कोनो तस्वीर मे हम --
फ्रेम नहि लगा पबैत छी।
ओकरा टाँगि नहि सकैत छी
अपन मोनक देवाल पर।

हमरा कोनो नाम दऽ दे

तों प्रतिक्षण, प्रतिपल, प्रतिदिन
हमरा लए कोनो
नव खबरि अनैत छें ।
एहि कारण तऽ कहै छियौक
जे तों कहुखन जानकी
तऽ कहुखन राम
हमरा लगैत छें ।

तोहर एहि बदलैत रूप मे
हमर अस्तित्व
मेटा रहल अछि।

तोहर विराट रूप के आगू मे
हम गुमनाम भऽ जाइत छी।

एकान्तो मे एक भीड़
हमरा देखाइत अछि।

डूबि गेल छी तोहर प्रेम मे
भऽ सकौ तऽ ताकि दे हमरा।

यदि देबैक छौ
कोनो सनेश
हमरा जेबाक काल, तऽ
हमरा कोनो नाम दऽ दे।

बुझैत छी जे
तों पाथर नहि छें।
लोक सभ मजबूर केलकौ
जे चुप्प रह।
हमरा तऽ एहि भयानक
चुप्पी सँ स्नेह अछि।

भगवान नहि करैत छैक
गप्प हरदम !
ओकर मौन हमरा
नत करैत अछि।

एहि दुआरे
सभ दिन जकाँ फेर
आइ तोरा प्रणाम करैत छियैक।
एक 'कन्फीडेंशियल' तोरा
कहि दियौक हे हमर भगवान !
हम कोनो भक्त नहि छी।

कोनो वरदान नहि चाहैत छी।
एहि समस्त प्रेम-अप्रेम
संगीत आ' कोलाहलक बीच मे—
सभ हमरा वीणा आ' सितारे
तऽ लगैत अछि।
हमर चारू दिस स्नेहक
मदिर गाने तऽ भऽरहल।

कानब नहि, नोर के रोकि सकैत छी, हाँ।
चिकड़ब नहि, मौन सेहो भऽ सकैत छी, हाँ !
गायब नहि, गुन-गुना सकैत छी, हाँ !

जनैत छी तों—
हमरा मोन नहि पड़बें।
किएक तऽ तों हमरा सँ
दूर नहि छें।

हमरे लग छें
जनैत छी जे ई स्नेह, रंग, खुशी
छूटि नहि जाएत
एकरा समेटि के लऽ जायब।

समेटि के लऽ जाएब सभ किछु
छोड़ि नहि सकैत छी,
बहुत स्वार्थी छी हम !

मोन पड़ल हमर 'हम'
हेरा गेल अछि एतहि कतहु
की ओ तोहर लग मे
तऽ नहि छौ ? नहि ? ?
डूबि गेल छी तोहर प्रेम मे
भऽ सकौ तऽ ताकि दे हमरा
यदि देबैक छौ कोनो सनेश
हमर जेबाक काल
तऽ हमरा कोनो नाम दऽ दे।

उदास भोरक एक गीत

की लिखू ? की गाउ ? ककरा सुनाउ ?
ई उदास भोरक गीत !
के सुनत ? ककरा छैक सुनि लेबाक सामर्थ्य ?
जगतीक चहल-पहल सँ बाहर
एक तंग कोठलीक दायरा मे
अपना केँ समेटि लेबाक प्रयास
आब अनसोहाँत लागि रहल।
भिनसुरका कुहेश सँ साँझक
पथर कोइलाक धुआँ तकक
अविराम पथ........
एहिना एक धुरी पर
घूमि रहल अछि।
कोनो सौन्दर्य नहि
कोनो नवीनता नहि
हृदयक टीस सँ लऽ कए
शारीरिक टीस धरि।
लगैत अछि जेना लाल
तप्त लोहाक छड़—
बदलल जा रहल अछि
हमर पूरा अस्तित्व केँ जरौने
भस्मसात् केने।
एक दर्द, अनेक दर्द—

दर्द, की दर्द ?
सभटा मिझरा गेल अछि
सभ दर्द।
झरकैत हवा केँ बीच
कठुखनक ठंढ भरल सिहकन
पोर-पोर केँ कँपकपा दैत अछि।

जेना आगू महक केराक
भालरि फड़ फड़ा रहल अछि।
ककरो कखनोकमधुर स्पर्श...
सम्पूर्ण चेतना केँ—
डूबाक देबाक प्रयास।
कोनो कल्पनाक फुलाएल
गाछ आ' सुगंधि
सभ एक ठाम आबि मीलि
लऽ रहल अछि चुटकी
हमर भावुक मोन केँ।
—मानि लेलहुँ जे हम अपना केँ
बिसरा लेने छी।
छोड़ि देने छी सुखद अतीत केँ
कोनो डायरीक पन्ना मे आ'
मोनक 'डबल लॉक' मे।

तखन एहि वर्तमान मे कछमछाइत
दर्द सँ चटकैत बारुद जकाँ हमर देह
खाली स्मृति पर किए जीबि रहल अछि ?
हम अपना के नष्ट नहि करऽ
चाहैत छी, नहि ! नहि !!

अपन देह के माटि मे नहि मिलऽ देब
मुदा कोना ?
के बूझत ? के सुनत ?
आह, ककरो तऽ सुनबाक चाही !
(ई उदास भोरक गीत)

कहिया धरि ?

असगर बैसल-बैसल हम
उबिया गेल छी।
हमर मोन पंचर भऽ गेल अछि।
ई बँसबिट्टीक भीतरका संसार,
बाहरक चहल-पहल, प्रेम-अप्रेम -
हमरा आब अनसोहाँत लागि रहल।
ई जिनगीक बोझ सान्त्वनाक रस्सी सँ
बान्हि कए उघैत रहब कहिया धरि ?
कहिया धरि रंगीन सपनाक वर्त्तन मे
आशाक माँटि लगबैत रहब ?
कहिया धरि ? कहिया धरि ?....?
—हमरा नहि फूड़ा रहल अछि
कोन इजोत दिस जाउ ?
यात्राक परिणति की हैत ?
कोन एहन मेला अछि जाहि मे
अपन अस्तित्व के हरा लिअऽ ?
एहि 'कैक्टस सँ भरल वातावरणक
सेट पर कहिया धरि --
एक्टिंग करैत रहू ?
हमर धैर्यक शर्बत आब
पूर्णतया निघटि गेल अछि।
आब हम अपन मोनक गिलास मे
एकरा ढारि नहि सकैत छी।
कतेक दिन तक हम कृत्रिम साँस
लैत रहू ? 'कैक्टस' क काँट हमर
देहके रहि-रहि बेधि रहल।
लहुलहुआन भेल अपन देहकेँ
कहिया धरि देखैत रहब—
फूटल अइना मे ?
कहिया धरि ? कहिया धरि ? ?



एक विन्दु : तीन बिम्ब

एक विन्दु,
काठक धुँआएल घर सँ बाहर
दुधिआएल शीशाक भीतर मे
हमर आँखि झलफलाइत—
देखि रहल—
अपन सम्पूर्ण शक्ति के मचोड़ि केँ

बनि रहल एक विन्दु......।
आ' बरखा सँ भीजल शीशा पर
बनि रहलैक ओहि विन्दुक
तीन बिम्ब...-...?

तीन बिम्ब,
एक - निस्तब्ध, निष्क्रिय ठाढ़ गाछ
करेन्टक झटका सं खसल मनुक्ख
बरखा सँ भीजैत कारी कौआ
एक लीक पर डेग दैत प्रकृति
जेना सभ संगे कएल गेल छैक —
बलात्कार... ...।
कोनो इच्छाक पूर्ति !

दू तकैत सोनिताएल आँखि
खसि रहल कोनो नोर
गोबर सँ नीपल माटि पर
आ' सुखा रहल ओहिना —
जेना रौद उगला पर बिला जाइत छै
राति मे खसल प्रकृतिक नोर।

तीन — हम खसि रहल छी।
खसल जा रहल छी।
किए करू बचबाक चेष्टा ?
हाथ मे आएल डारि के छोड़ने
क्रमश: नीचा दिस बढ़ल —
जा रहल छी।
कतऽ जा कए ठहरत
हमर भारी मोन ?
कतऽ जकए चूर-चूर हैत
हमर हृदयक हड्डी ?

प्रेमक तीन आखर

एक, हमर चंचल लेखनी,
रचि रहल अनुपम शब्द
गढ़ि रहल सुन्दरताक पाँती।
ओह, नहुँ-नहुँ चलिते ई,
भरिसक आखर देखि-देखि
भऽ गेल अछि चंचल।
लुप्त भऽ गेलैक एकर स्थिरता,
एकदम अस्थिर भऽ गेल हमर लेखनी।
संतोष अछि मुदा हे हमर आखर !
कतबो झटकारि के चलैत अछि
मोतिए सनक पाँती निकलैत छैक
एहि लेखनी सँ
तोहर आँखिक भाषा पढ़ि।

दू, हमर मोनक अइना मे
तोहर प्रतिबिम्ब,
खुजल केश फुलाएल गाल
नम्हर-नम्हर रसाएल आँखि।
मोन होइत अछि घोंटि लिऔ तोरा
अइना के पीसि कऽ चीबा जाइ
कऽ ली अपन हृदय लहूलहुआन
पोसि ली एक मधुर दर्द।

तीन, एतेक लग किएक अबैत छें ?
की कने दूर सँ गप्प नहि होइछ ?
दू प्रश्न,
तीन उत्तर,
सुनि ले फराके सँ।
आ,.........;
सभ दिन जकाँ अपन नूआ सम्हारि
पैघ डेग दैत चल जो
एहि बँसबिट्टी सँ बाहर...। ☐

एक राति

एक राति,
पुनिमक शीतल राति
चाँदनी सँ तीतल धरती
चकमक, उजराएल गुलाबक फूल
रजनी गंधाक सुगन्धि
महमहाएल चारूमहर—
तकैत, अलसाएल अहाँक नयन,
प्रिये, केहन सुन्दर !
मोन पाड़ू बीतल रातिकें ।

ओ राति,
जहिया हम-अहाँ
बैसल फूलवारीक कोन मे
सजा रहल छलहुँ
भविष्यक हरियर सपना ।

गुलाब सँ बेली तक दौड़ैत नजरि !
अहाँक निन्न सँ भरल आँखि
ओ निशाँ......!
डोला अहाँक अंग-अंग के
छलका दैत छलहुँ
निन्न के अहाँक गहींरगर
आँखि सँ ।

ढरकैत आ सद्यः शराब
पिपनी कें बलजोरी खोलबाक प्रयास
पैंसि जाइत छल हमरो किछ
अनेरुआ निशाँ, अनजान मदहोशी ।
मोन अछि ओ आदान-प्रदान,
ठोरक ओ कंपन !

प्रिये, केहेन मदिर !

मोन पाड़ू बीतल राति कें ?

बिसरि कोना सकब ओ दिन
ओ सपना सनक राति
ओ पुनिमक राति
भीजल-तीतल धरती
गुलाबक फूल ?
आइ,
एहि पूलतर बैसल
निट्ठाह रौद मे
सिमेन्टक गाढ़ा सँ सनल हमर, अहाँक हाथ
कोइला मिश्रित अहाँक सोन सनक देह !

प्रिये, रोटी आ' नोन-मरचाइ दैत
एहि कनैल गाछक छाया मे
किएक कँपै अछि अहाँक हाथ ?
किएक भीजि गेल अहाँ नयनक कोर
की फेर पिआबऽ चाहैत छी मदिरा,
अहाँक ठोरक अनसोहाँत कंपन—
हमरा मदहोश बना रहल अछि फेर सँ ।

तखन कोना बनत पूल
एहि रौद मे ?

प्रिये, ओ राति आ' ई दिन ! नहि, नहि ।

ओ मदिर राति......!
मोन पाड़ू ओहि बीतल राति कें ।

साँझ

कारी लागल सन्यासो रंगबला,
चेन्ह लागल मकान पर
साँझ फेर आबि गेल
बूलि, धूमि फीरि कें ।

पाछू सँ लाल-टरेस बुझाइत सूर्य
आब धूमिल भेल जाइत छथि ।
चुनचुनियाँ चिड़े लंक लऽ कए
भागि रहल अछि—अनन्तमे.......!
नेना भुटका सभ खेलाए लागल
अनसोहाँत जकाँ करिया झुम्मरि
वैह पुरने चालि पर ।

पथर कोइलाक गंध आब
पसरय लागल अछि वातावरण मे ।

ठोर सुखाएल बाबू केश झिड़ियौने
केवाड़ पकड़ि आबि गेला
घर मे...!
पावर हाउसक कर्मचारी ठेंगा सँ
बत्ती के लेसि रहल अछि
आ' ओहि सँ पोलतर बैसल
कुकूर के पीटि रहल अछि ।

छाउर भेल मानव,
ओँघाइत—
निन्न लेल छटपटाइत दिन ।

कंबल कान्ह पर रखने
लाठी लऽ चल आएल अछि
साँझ
पोटरी मे करिया रंग लेने ।

हकाड़ि रहल लोक कें
कर्फ्यू महक पी० ए० सी० जकाँ
दाबी बेसी भऽ गेलैक अछि
अधिकारक ।

नहि कियो किछु कहै छै
तैं ने सभ दिन
एहि बेर मे चल अबैत अछि ।

बेइज्जत जकाँ, धुर !
लाजो नहि होइ छैक ?
जो पड़ा जो –
नहि तऽ हमहूँ बिजली बारि देबौक
फेर कतऽ रहतौक तोहर अस्तित्व ?



नव सीन

आएल नववर्ष लऽ कए
नव सनेश,
देखू, उगि गेल छथि दिनकर
राति नहि अछि आब शेष।
किरण भेदि वर्ण मण्डल—
छिटकि गेल 'फ्लशलाइट' जकाँ।

तैयो कोना सक छी बिसरा
पहिलुका वर्षक प्रेम कें।
देलक नयापन के ज्ञान,
आ' अपना के चिन्हबाक क्षमता !
एक-एक सीन— फ्लैश बैक' मे
ससरि रहल नहूँ-नहूँ –
अपना कें स्थापित करबाक
'टेमप्रोरी' प्रयास
बिन पेनीक यश
छिट्टा भरि उपाधि
कागजी कार्य, निष्क्रियताक
सक्रियता, क्रमशः आबि रहल
मानस पटल पर !
धोखा ! धोखा ! मात्र धोखा !!!
आत्म प्रवंचना
एहि सँ बढ़ि किछु नहि।

एखनहि खेला अएलहुँ 'विलेनक' पार्ट
पुरना पर्दा पर
आ' नवसीन मे 'हीरो' भऽ
चाहैत छी उतरय,
सैह इच्छाक सनेश कें
मोटरी बन्हने
लदने ड्यूटी पर आबि गेल
वैह पुरने नव वर्ष !
आ' भय अछि तैयो
विलेन सँ हीरो हेबाक
तथाकथित प्रयास मे
भऽ नहि जाइ, हा !
'एक्सट्रा' एहि नव—
ट्रेजडीक सीन मे।

सीप महक मोती

कतबो चुप्प रहब,
तैयो किछु बजने जाएत।
मोन के हकारि लऽ जाएब
कतबो दार्शनिकक खेत मे।
कतबो करब ध्यान शांति, सहिष्णुताक
कतबो रोपब धान गांधीवादी बियाक।
कतबो निर्मोहक यान पर उड़ि जाएब
थोड़बो जँ खिड़की सँ हवा आओत

पड़िये जायत किछु बूँद असहयोगक
अहाँक आदर्शक जुलूस मे।
नहियोँ जँ चाहब अहाँ,
बिन रेड़क रेड़
बिन बातक बात
अपन अस्तित्वक रक्षा लेल करैए पड़त।
लड़ैए पड़त अपन स्व लेल
अपन जननी लेल, अपन जनक लेल
संग-संग अपनो लेल
जीती तऽ वाह-वाह
तैयो कोनो खुशी नहि—
हँसियो ने सकैत छी।
हारि जँ गेलहुँ तऽ—
खुलि कें हँसबाक अधिकार होयत।
अनको, अहूँ कें।
मोनक कोनो कोन मे जँ टीस मारय
चल जाइ प्रतिक्रियाक बीच मे
मध्य मे, अपन आदर्श सँ बाहर
तैयो टीस पर चोट खाए
ठोर कनिएँ पसरिते रहय।
जँ एतेक कऽ सकी अपना—
एवं अनका लेल
जरा सकी अपन टघरल नोर कें
बनि जाएत जरूर 'मोती'
'सीप'क कठोर बंधनक
बीच मे।

पाँचटा अनैरुआ कविता

एक,

महमह करैत मंदिर
बाँसुरीक धुनि पर
फेरो आइ जन्म लेताह
कृष्ण कन्हैया, बंशी बजैया !
एहिना सभ साल जन्मैं छथि
अबैं छथि संसारक --
'इन्सपेक्शन' करय।
अइबेर तैयो कने
बेशी बात छन्हि, भरिसक
बाँसुरी बिसरि गेलाह
लेने छथि हाथमे 'वायलिन'
आ, ठाढ़ अछि लोक सभ
नवका प्रसाद लेल।

दू,

नाचि रहल लोक सभ
'डान्सिंग' फ्लोर पर।
ट्वीस्ट, रौक एण्डरोल पर
'ब्लैक एण्ड व्हाइट'क पाँखिपर
लेने वेसुध भेल कर-संगी केँ
हरियर, उज्जर, पिअर, लाल
रंग छै संसार के,
होश नहि छै, हेतै काल्हि,
कार्कक फटाका मे उबडूब करैत —
मानवक छिड़िआएल जिनगी।
डूबि गेल तखनहि—
पैर पिछड़ि गेलैक फ्लोर सँ जखनहि।

तीन,

भने ओ रिक्शावला
एहि गन्हाएल दुपहरिया मे
जा रहल झपसन !
मोन छै ओइ पुरना 'चाल' पर
जतऽ आत्मीयताक बोध करबाक छैक,
छैक जतऽ मँगनी मे सिनेमा देखबऽ बला —
बेटा बेटीक सिनेमाघर !
हँसी-प्रसन्नताक दू चारि—
गिलास लोड करबाक लेल
भगा रहल आँखि-मूनि रिक्शा केँ।
बुझलक संसार के तखन—
झटका सँ अगिला पहिया टेढ़ भेल जखन।

चारि,

मोन छै ओकरा
जोड़ने छल जहिया जीबऽलेल
जिनगी भरिक सम्बन्ध।
अपन आत्माक हाड़ झलकैत शरीर
अँतरी मे धसल पेट
एवं अपन 'भगवान'क लहू फेकव
खाटे पर मुर्दा जकां पड़ल।
ओकर सभहक जिनगी लेल मोन छै—
दस रुपैयाक ओ शरीरक सम्बन्ध।
फेर आइ 'सिनूर' कानऽ लगलै मटिया,
तै पर आबि रहलै एक नव दुखिया।

पाँच

विनाशक करिया जीह
कऽ रहल अब-तब,
कऽ दिअइ ध्वस्त एहि संसारके
कऽ उपद्रव।
भागि रहल लोक सभ
ओहि दूर महक आगिक—
झुण्ड मे, हाथ मे पिजाएल
कचिया हाँसू के—
खद्दर के कपड़ा सँ झाँपि-तोपि।
दौड़ि रहल प्रगति दिस...
कऽ रहल अपूर्व सेवा मानवताक।
ज्ञान पहुँचि गेल अपन आदि—
अज्ञान पर।
बोझक बोझ सेमार के खींचने
मूड़ी उठौलक पानि सँ
ढाकीक ढाकी नेता सभ
अनेरुआ......।

दू बून्द नोर

'बिहाड़ि, पानि, पाथर'
तीनूक 'फुल-फोर्स'
अपना भरि दम लगा कऽ
शरीर मे कनकनी जगाकऽ
सों-सों......हाहि-हाहिक
प्रचण्ड, अद्भुत स्वर !
मानल अहाँ तूफान छी
बिहाड़ि छी।

किन्तु,
हृदयक बिहाड़ि सँ
पैघ नहि
बिहाड़ि उठैत अछि
करेज मे।
धूरा उधियाइत अछि

देखु नोन छिड़कि
पाँच आँगुर कें,
भूतक, पिशाचक।
संसारक प्रति
स्वार्थक प्रति
घृणा रूपी विहाड़ि विड़्ड़ो उठैए
—हम गरीब छी
रंक छी,
फूसक घर अछि।
पुरना खड़ सँ छारल
पतलोइ सँ चाड़ लदल।
बैसल घरक कोन मे
दूनू ठेहुनक बीच
मूड़ी नुका।
एक हवाक शीतल झोंक—
जान उपछि अबैत अछि
काँपि उठैत हमर नग्न
अस्थि पंजर शरीर।

किन्तु संतोष अछि—
देवाल परहक गिरगिट
सेहो कँपैत अछि।
जोर सँ खसैत अछि नीचा।
ओकरो लगलैक पाँजर, कोंढ़—
तोड़ए बला झोंका।
आर कसि कए
मुड़ी ठेहुन मे कसिलैत छी।
स्क्‌ जकाँ....।
गोनरि ओढ़ैत छी
आ'.......जोर सँ उठैत अछि
बिहाड़ि
हमर फूसक छप्पर उड़ैत अछि
हम उघार भऽ जाइत छी।

छलहुँ तऽ पहिनहि सँ—
आब पूरा भऽ जाइत छी।

देखैत छी ऊपर—
बिन छप्परक चाड़ कें।
कारी-कारी डेराओन आकाश
काँपि जाइत छी
दू बुन्द गरम नोर
ढरकि जाइए
हम ओहि सँ नहा जाइत छी।
नोर माटि मे खसैत अछि
आ' आलिंगन करैत माटिके
हम देखैत छी........!
हवेली परक बच्चाक रेडियो
अहू मे बाजि रहल अछि
'साँवरिया घर आ जा....।
हम सोचैत छी
हमहू वैह छी
वैह रेडियो वला मौगी।
किन्तु, अन्तर एतबा अछि
जे साँवरिया नहि
प्रतीक्षा अछि मृत्युक !
आ'...आ.. मृत्यु !
हम चीत्कार करैत छी।
हमर आवाज, हमर सुनसान
भयावह घर मे
चकभाउर दैत अछि
औनाइत अछि...!
एतबे मे पानि जोर सँ पड़ैत अछि
मुसलाधार पानि
आ' पानि पड़ि रहल अछि
हम भीजि रहल छी...!

गोनरि सनगिध भऽ
जाइत अछि।
भीजि जाइत अछि।
करेज मे पानि पैसि
जाइत अछि।
आ', आ' हमर प्राण
बाहर आबि जाइत अछि।

हम खसि पड़ैत छी
भीजल धरती पर
ताहि पर पाथर पड़ि रहल अछि।
हमर निर्जीव माटिक शरीर पर।
गोनरि हमर कफन थिक
आ' हम मरि जाइत छी।
मरि जाइत छी।
चिता नहि, पानि हमरा
बहा दैत अछि।
हम बहि रहल छी
बहि रहल छी
अपन घरक संग...।

आब हमरा शांति अछि,
किन्तु दुख अछि—
हमर दू बून्द नोर
गरम नोर
हमर हृदयक नोर
वर्षाक पानि मे
घोखड़ि रहल अछि।
हमर निकलल आँखि —
देखैत अछि निर्जिव भए
चुप्प भए...!
नोर बिला रहल अछि
बिला रहल अछि ......!





(अशोक मास्को होस्टल मे)

हम बूझै छी—

अहाँकेँ आब कोनो
सप्पत नहि लागत,
मीतक सप्पत, प्रीतक सप्पत
कोनो सप्पत नहि ।

तेँ भाइ,

अहाँकेँ ओहि जरलाहा रोटीक सप्पत !
बाजू कने बाजू, चुप्पी नहि सोहाइये ।